आरती श्री आदिनाथ स्वामी की

ओम जय ऋषभदेव देवा सुरनर मुनि।
गण थारी स्वामी करे चरण सेवा।
ओम जय ऋषभदेव देवा।

सरवारथ सिद्धि से चयकर स्वामी मात गरभ आयें।
प्रन्द्रह मास अवध नगरी सुररतन सुवर्षाये॥ ओम जय...
लाख तिरासी पूर्व भोगे भोगे जग के भारी।
निलेजना मृत्यु को लखकर बने सूतपधारी॥ ओम जय...
तप बल से घातिया चूरकर केवल पद पाया।
समोर्शण में अन्तरीक्षराचे अद्भुत माया॥ ओम जय...
दिव्य धुनी सुनी मिटी असाता भव बाधाहारी।
सुरनरेन्द्र चक्री खग पूजे गुण भविभारीं॥ ओम जय...
तुमने ही इस अंध जगत को शिव मार्ग दर्शाया।
तुम वाणी से जीव अनन्ते शिव पद को पाया॥ ओम जय...
अशरण शरण दयाल जगोत्तम हैं संकट हारी।
भवसागर से पार लगायो शरण लहीं थारी॥ ओम जय...
करूं आरती दीप जलाकर मोह अन्ध जारो।
बार बार हैं यहीं प्रार्थना भवसागर थारों॥ ओम जय...
भगवत दास बांस है फरिहा सदा चरण चैरा।
ऋषभनगर नित जजै प्रभो पद मिटे सुभव पैरा॥ ओम जय...
देवा सुरनर मुनिगण थारी स्वामी करें चरण सेवा॥ ओम जय...